लेखक - लक्ष्मण सिंह ने दिल्ली के जामिया मिल्लिया इस्लामिया से दलित राजनैतिक कला विषय पर Ph.D.की। इनका १२ अलग अलग विषयों में यू जी सी नेट परीक्षा पास करने का राष्ट्रीय रेकॉर्ड भी है। फ़िलहाल ये ईरान में रहकर स्वतंत्र रूप से एथ्नोग्राफ़िक शोध कर रहे हैं। सम्पर्क सूत्र - laxman1378@gmail.com

पहचान का संकट एवं विभूतियों का जातीय हरण

भारत में जातियों में पहचान का संकट आधुनिक युग में एक बड़ा मुद्दा है। जातियां अपने अपने सुविधा के हिसाब से अपने आप को किसी लेजेंड से जोड़ देती हैं।

मध्य युग से चले आ रहे चारण भाट अगर किसी सामान्य हिन्दू के घर में आते हैं तो उसे किसी न किसी बड़े पौराणिक देवता या बड़ी विभूति से जोड़ देते हैं। इसमें एक और प्रवृत्ति दिखाई देती है वह है किसी संख्या में छोटी जाति का अपने आप को किसी बड़े और शक्तिशाली जातीय समूह से जोड़ देना। इसमें सबसे बड़ा उदाहरण पश्चिमी उत्तर प्रदेश एवं दिल्ली के आस पास बसी त्यागी ब्राह्मण जाति का है। ये जाति संख्या में १० लाख से जयादा नहीं है। इनके सभी गोत्र ब्राह्मणों वाले हैं। वर्ण अनुक्रम में ये ब्राह्मण वर्ण के अंतर्गत आते हैं। लेकिन अन्य ब्राह्मण इन्हे सच्चा ब्राह्मण नहीं मानते और कहते हैं कि ये हम में से नहीं हैं। त्यागी अपने आपको त्यागी ब्राह्मण कहते हैं और इस जाति के लिए प्रयोग होने वाला एक शब्द तागा भी है। त्यागियों का कहना है कि मध्य युग में पौरोहित्य कर्म को त्याग कर इस जाति ने कृषि व्यवसाय को अपना लिया इसलिए त्यागी शब्द का प्रयोग अपने नाम के साथ करने लगे। अन्य ब्राह्मणों का त्यागियों के विषय में कहना है कि एक दन्त कथा के अनुसार एक राज्य में राजा सदैव नवविवाहित ब्राह्मण को 101 स्वर्ण मुद्राएं दक्षिणा में देता था। एक ब्राह्मण जो विपन्न था उसने छद्म रूप से अपने साथ एक वैश्या को ले जाकर कहा कि उसने इस स्त्री से विवाह किया है इसलिए वह 101 स्वर्ण मुद्राओं का अधिकारी है। राजा ने उसे 101 स्वर्ण मुद्राएं दे दी बाद में जब ब्राह्मण समाज के लोगो को पता चला कि उसने वैश्या से विवाह किया है तो ब्राह्मण समाज ने उस ब्राह्मण और उसकी वैश्या पत्नी से होने वाले बच्चों को समाज से त्याग कर दिया। प्रसिद्ध त्यागी साहित्यकार रवीन्द्रनाथ त्यागी ने अपनी जाति की उतपत्ति के विषय में इस ब्राह्मण एवं वैश्या वाली कहानी से ही त्यागी समाज की उतपत्ति को सही बताया। त्यागी समाज के सामने एक पहचान का संकट आने पर उन्होंने पूर्वी उत्तर प्रदेश एवं बिहार में वास् करने वाली भूमिहार जाति से अपने आप को जोड़ लिया और इस बारे में प्रचार किया गया कि ये दोनों जातीय समूह एक हैं। इस जातीय संयोजन को बढ़ावा देने के लिए अनेक सम्मेलन भी उत्तर प्रदेश में आयोजित किये गए। ऐसा ही एक संगठन त्यागी ,भूमिहार ,चितपावन ,नम्बूदरी ब्राह्मण संघ भी बनाया गया जिसमे चितपावन एवं नम्बूदरी जैसी संदिग्ध पहचान वाले ब्राह्मण समूहों को जोड़ दिया गया। इसमें बड़ी जाति से अपने छोटे जातीय समूह को जोड़ने का एक मकसद वृहत्तर सामाजिक पहचान एवं राजनैतिक शक्ति में बढ़ोतरी करना भी है

दूसरे प्रकार की पहचान की राजनीति है किसी महापुरुष या ऐतिहासिक विभूति को अपनी जाति का बताना। इसमें सबसे बड़ा और ज्वलंत उदाहरण अभी राजा मिहिरभोज का है। गुर्जर प्रतिहार वंश में जन्मे राजा मिहिर भोज एक प्रतापी राजा हुए हैं। वर्तमान में अन्य पिछड़े वर्ग की सूची में आने वाली गुर्जर जाति ने मिहिरभोज को गुर्जर जाति का राजा बताना शुरू किया और मिहिर भोज जयंती का आयोजन किया गया इन आयोजनों में खास बात यह थी कि इन सभी आयोजन में राजा मिहिरभोज को गुर्जर प्रतापी राजा मिहिरभोज बताया गया इसे लेकर कुछ राजपूतों ने आपत्ति की और राजस्थान से लेकर उत्तर प्रदेश में कई इलाको में गुर्जरों एवं राजपूतों के बीच विवाद हुआ और कई जगह हिंसा भी हुयी। राजपूतों ने गुर्जरों को इतिहास चोर बताया। वैसे ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर देखा जाए तो राजा मिहिरभोज के गुर्जर होने की संभावना ही अधिक है ना कि राजपूत।

दुसरा बड़ा उदाहरण क्रन्तिकारी उधम सिंह का है। उधम सिंह एक क्रन्तिकारी थे और उन्होंने जलियाँ वाला बाग़ हत्याकांड को अंजाम देने वाले अंग्रेज अफसर जनरल डायर को जलियांवाला बाग़ हत्याकांड के दशकों बाद इंग्लैण्ड में जाकर मार दिया था। इस हत्या के लिए उधम सिंह को फांसी की सजा हुयी। वस्तुत उधम सिंह के माता पिता पूर्वी उत्तर प्रदेश के एक गाँव से १८८० के दशक में पंजाब में आकर बस गए और एक काम्बोज जाति के जमींदार के यहाँ नौकरी करने लगे। उधम सिंह के माता पिता की मृत्यु उधम सिंह के बचपन में ही हो गयी थी। उसी काम्बोज परिवार में उधम सिंह पले बढे। काम्बोज जाति संख्या में कम एवं राजनैतिक रूप से सशक्त जाति नहीं है। अभी पिछले कुछ सालों से काम्बोज जाति ने उधम सिंह के नाम साथ कम्बोज जोड़कर उनकी जयंती मनानी शुरू कर दी। उधम सिंह को दलित सिख एवं पंजाब एवं उत्तर प्रदेश के दलित का नायक मानते हुए बहुजन समाज पार्टी की सरकार ने उत्तर प्रदेश में एक नया जिला उधम सिंह नगर बनाया था जो कि सिख बहुल जिला है। उधम सिंह की जीवनी गंभीर शोध के बाद अनीता आनंद द्वारा लिखी उधम सिंह की जीवनी में भी उधम सिंह की जाति दलित है न कि काम्बोज।

तीसरा ऐसा ही एक मामला पंजाब के सिख राजा महाराजा रणजीत सिंह का है। अंग्रेजों द्वारा एवं मानक इतिहासकारों ने महाराजा रंजीत सिंह की जाति सांसी बताई है जो कि फ़िलहाल एक अनुसूचित जाति है लेकिन पंजाब के जाट सिखों ने बाकायदा एक मुहीम चलाकर इंटरनेट पर हर जगह महाराजा रंजीत सिंह की जाति जाट सिख लिखी है।

चौथा और सबसे रोचक केस दलित जाति भंगी का है। पिछली शताब्दी के शुरू में बाकायदा आर्य समाज के कुछ लोगों ने भंगी एवं चूहड़ा जातियों के लोगों को बताना शुरू किया कि जिस लाल बेगी नामक संत कि वे पूजा करते हैं वो वस्तुत रामायण के रचयिता महऋषि वाल्मीकि हैं। हीन भावना से ग्रषित जाति के लिए वाल्मीकि जैसा पूर्वज होना एक गर्व की बात थी। लेकिन शौयद ही एक परसेंट भंगी। चूहड़ा जाति के लोगों ने वाल्मीकि रामायण पढ़ी हो या उनके घर में हो। एक तरफ तो दलित जाति का वयक्ति राम के काल में ही रामायण लिख रहा है और उसमे यह भी जिक्र है कि नीच जाति में जन्म लेने के कारण राम ने शम्बूक का वध किया। यह अपने आप में एक बड़ा विरोधाभास है। वस्तुत यह काम आर्य समाजियों एवं हिंदूवादियों ने भंगी एवं चूहड़ा जाति को हिंदुत्व

के फोल्ड में लाने के लिए किया। जबकि दक्षिण भारत में वाल्मीकि को अपना पूर्वज मानने वाली 3 ब्राह्मण जातियां पहले से ही मौजूद हैं। महापुरुषों को जबरदस्ती अपना बताना या उनपर अधिकार जमाना वस्तुत जातीय भेदभाव एवं इतिहास में हाशिये पर पहुँच गए समाजों एवं अन्य कुंठाओं का परिणाम है। समाज की सशक्त जातियां जैसे कायस्थ ,ब्राह्मण ,बनिया ऐसा शायद ही करती हों। सभी लोगों की डीएनए जांच अगर होने लगे और वे अपनी उस जांच रिपोर्ट को सामने रखकर अपने जातीय इतिहास पर दम्भ और दावा करें तो बेहतर हो।